रामनगर सर्वेक्षण

डा. नीरज कुमार पाण्डेय

रामनगर में ज्ञान-प्रवाह द्वारा 2005 ई. के पूर्वार्द्ध में कराये गये स्थलीय सर्वेक्षण के आधार पर काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्त्व विभाग एवं ज्ञान-प्रवाह के संयुक्त तत्त्वावधान में उत्खनन हेतु भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण, नई दिल्ली को आवेदन भेजा गया। स्थल की महत्ता को देखते हुए भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण ने दोनों संस्थाओं को संयुक्त रूप से उत्खनन की अनुमति दी। 21 मार्च 2006 से 30 अप्रैल 2006 के बीच प्रो. विदुला जायसवाल के नेतृत्व में उत्खनन का कार्य सम्पन्न कराया गया। उत्खनन के दौरान लेखक द्वारा रामनगर में गङ्गा के तटवर्ती क्षेत्रों का स्थलीय सर्वेक्षण भी किया गया जिसमें मुख्य रूप से *गोला घाट, कुत्ता घाट, उड़िया घाट, कोइरिया घाट* आदि प्रमुख थे। सर्वेक्षण के परिणाम उत्साहजनक रहे जो काशी के इतिहास की कड़ियों को आगे बढ़ाते हैं।

स्थलीय सर्वेक्षण से प्राप्त पुरावशेषों का विवरण निम्नवत् है-

मृण्मूर्तियाँ (Terracottas)-रामनगर के सर्वेक्षण से विभिन्न कालों की मृण्मूर्तियाँ प्राप्त हुई हैं। मौर्यकाल की मृण्मूर्तियों में विभिन्न आकार के पशुओं की टूटी हुई आकृतियाँ मिली हैं जिसमें हाथी की आकृति महत्त्वपूर्ण है। शुंग काल की मृण्मूर्तियों में पक्षी और पशु की आकृति के टुकड़े प्राप्त होते हैं। सर्वेक्षण की महत्त्वपूर्ण उपलब्धि गुप्तकालीन मृण्मूर्तियाँ हैं। यहाँ से विभिन्न आकारों की पुरुष व स्त्रियों की मृण्मूर्तियाँ मिली हैं जिनके सुन्दर केश विन्यास और पगड़ियाँ दर्शनीय हैं।

मृत्पात्र (Pottery)-कालक्रम के अध्ययन में मृत्पात्र महत्त्वपूर्ण साक्ष्य प्रस्तुत करते हैं। रामनगर के द्वितीय चरण के सर्वेक्षण से प्राप्त मृत्पात्र और उनके टुकड़ों का विवरण निम्नलिखित है-

सर्वेक्षण से चटाई की छाप वाले पात्र (Mat Impressed Pottery) का टुकड़ा, धूसर पात्र (Grey Ware) के टुकड़े, काले लेपित पात्रों (Black Slipped Ware) के टुकड़े, उत्तरी कृष्णमार्जित पात्र (Northern Black Polished Ware) के अनेक टुकड़े मिलते हैं जिनमें थाली, सकोरा, चषक आदि शामिल हैं। कुछ काले व लाल रंग के पालिशयुक्त टुकड़े भी मिलते हैं। इनके अतिरिक्त लघु जलपात्र (Miniature Water Vessel), बटन जैसी घुण्डी वाले ढक्कन (Button Knobbed Lid), हत्थेदार पात्र (Handled Pottery), टोंटीदार पात्र (Spouted Vessels) के टुकड़े और अन्दर की ओर मुड़ी अवठ वाले सकोरे (Bowls with in-turned rim) भी प्राप्त हुए हैं। इन मृत्पात्रों का समय 800 ई.पू. से लेकर मध्यकाल तक है।

इनके अतिरिक्त विभिन्न आकार के मिट्टी के ठप्पे (Dabber), मिट्टी के मनके, अच्छी प्रकार पकाई गई मिट्टी के विभिन्न आकार की गेंद (Balls) और प्रसाधन में काम आने वाला शरीर साफ करने का उपादान (संभवतः पैर रगड़ने के काम में आने वाला) भी रामनगर के सर्वेक्षण से प्राप्त हुए हैं।

मिट्टी की चकरियाँ (Terracotta Discs)-सर्वेक्षण द्वारा रामनगर से विभिन्न आकारों की मिट्टी की चकरियाँ प्राप्त हुई हैं जो संभवतः खेलने या बाट के रूप में काम में आती होंगी। ये चकरियाँ मिट्टी

के टूटे बरतनों को भी घिसकर बनाई जाती थीं जो विभिन्न कालों की हैं। एक चकरी के दोनों तरफ सूर्य का प्रतीकात्मक चिह्न बना हुआ है और किनारे पर बार्डर भी बना है। इसी प्रकार एक टूटे हुए चकरी के दोनों तरफ गोल आकार के चिह्न बने हैं लेकिन उनकी संख्या भिन्न है, जिससे यह पता चलता है कि संभवत: यह खेलने का पासा रहा हो।

मिट्टी के चकरियों के साथ मिट्टी के बने पहिये भी रामनगर से प्राप्त हुए हैं। इनका आकार भी भिन्न-भिन्न है और ऐसा प्रतीत होता है कि इनका प्रयोग खिलौनों के पहियों के रूप में होता होगा।

प्रस्तर वस्तु (Stone Objects)–सर्वेक्षण की महत्त्वपूर्ण उपलब्धि प्रस्तर का एक बेलनाकार खण्ड है जिस पर मौर्यकालीन चमकदार पालिश लगी हुई है। यह पालिश उसी प्रकार की है जैसी कि अशोक द्वारा स्थापित स्तम्भों पर मिलती है। संभवत: यह स्तम्भ को दो भागों में जोड़ने के लिए पिन (डावेल) का कार्य करता हो। इसके अतिरिक्त सिल और लोढ़े के टुकड़े भी प्राप्त हुए हैं। सिल पर ज्यामितीय अलंकरण प्राप्त होते हैं। पत्थर की गेदों के साथ ही प्रस्तर निर्मित चकरी का टुकड़ा भी रामनगर से प्राप्त हुआ है।

उपरत्न (Semi Precious Stone)–पिछले वर्ष की भाँति यहाँ से विभिन्न प्रकार के उपरत्नों के टुकड़े, मनके और अधबने हुए मनके भारी मात्रा में मिले हैं, जिनमें अगेट, कार्नेलियन, क्वार्ट्ज, सीसा, क्रिस्टल (स्फटिक), जैस्पर आदि प्रमुख हैं।

सर्वेक्षण से यह संकेत मिलता है कि रामनगर क्षेत्र वाराणसी की भाँति प्राचीन संस्कृति का महत्त्वपूर्ण भाग था। उत्खनन से कुछ और महत्त्वपूर्ण तथ्यों के प्रकाश में आने की सम्भावना है।